कहानियाँ ही कहानियाँ

(कक्षा 3–5)

एडवांस

नाम

पिता/माता का नाम

स्कूल का नाम

कक्षा

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

प्रथम रिसोर्स सेन्टर

राजू की पतंग

कितने दिन हो गए बारिश नहीं हुई। आसमान में एक भी बादल नहीं है। सारा दिन चिलचिलाती धूप। चारों तरफ़ उमस ही उमस। नदी, नाले और तालाब सब सूख गए। इतनी गर्मी मानो जान निकल जाए। सब यही कहने लगे कि पहले कभी नहीं पड़ी थी इतनी गर्मी। राजू किसी से कुछ भी न बोला। वह चुपके से एक दिन छत पर चढ़ गया पतंग उड़ाने। पतंग पर

उसने लिखा - ओ बादल भैया, किसी से नाराज़ हो क्या? जल्दी से आओ ना। इस बार नहीं बरसोगे तो पेड़ों पर आम नहीं फलेंगे। सच बोल रहा हूँ। राजू ने यह लिख कर पतंग को हवा में छोड़ दिया।

दूर, बहुत दूर आसमान में बादल दिखाई दे रहे थे।

चित्रांकन-पार्थो सेन

लेखन-प्रथम

भालू का बच्चा

एक भालू का बच्चा था। वह एक गुफा में रहता था। यह गुफा एक बड़े जंगल में थी। जंगल एक गहरी झील के पास था। यह झील एक बड़े पहाड़ के सामने थी।

एक दिन भालू का बच्चा गुफा से बाहर आया। वह जंगल में चला गया। उसने तैरकर झील पार की। वह पहाड़ पर चढ़ गया। उसने चारों ओर देखा।

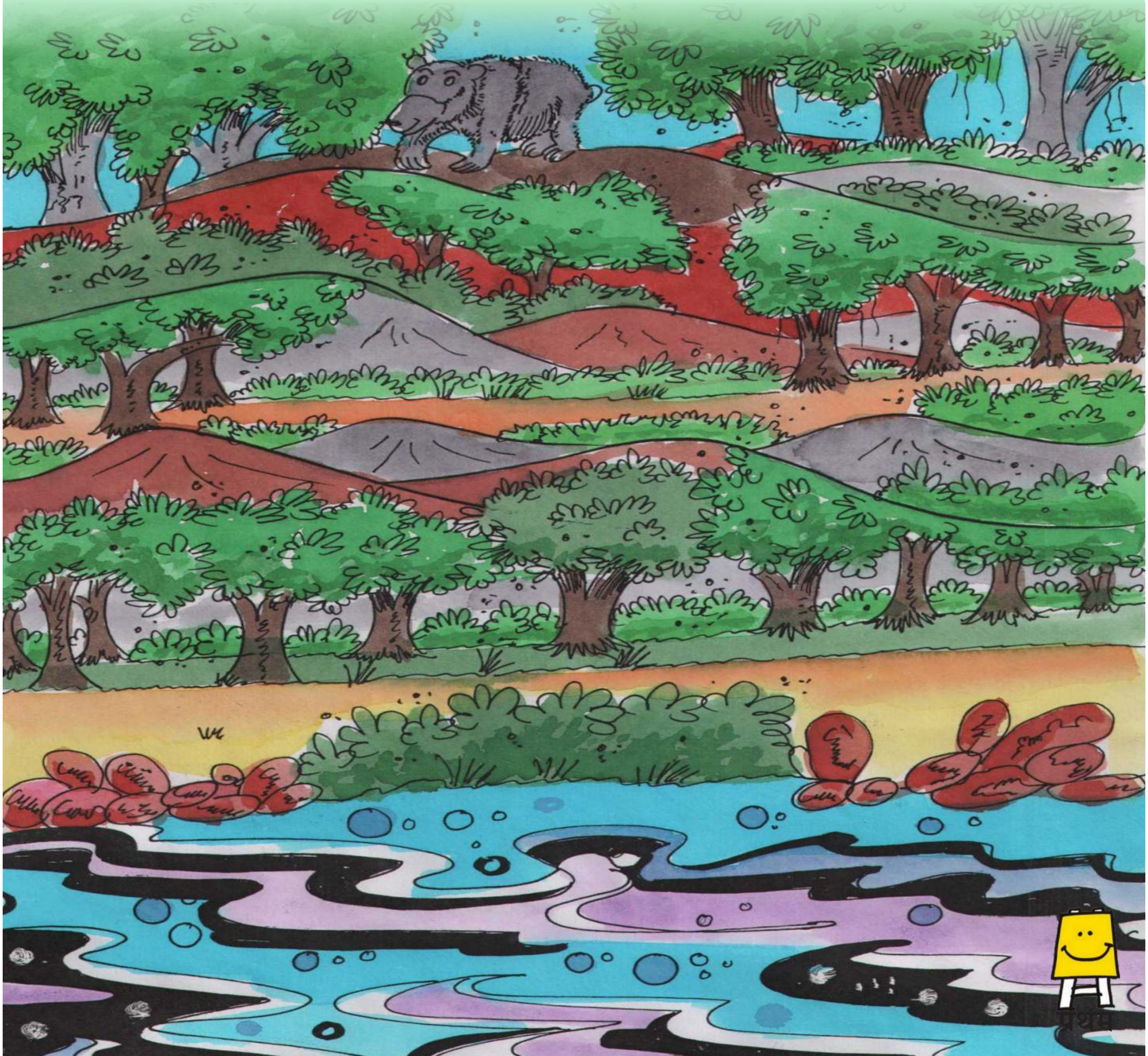

पहाड़ की चोटी से भालू को अपनी माँ दिखाई दी। वह पहाड़ से उतर गया। उसने झील को तैर कर पार किया। उसने जंगल को दौड़कर पार किया। वह तब तक दौड़ता रहा, जब तक अपनी गुफा के पास नहीं पहुँच गया।

उसकी माँ उसका इंतज़ार कर रही थी। माँ उसे देखकर बहुत खुश हुई। भालू का बच्चा भी अपनी माँ को देखकर बहुत खुश हुआ। वह माँ के साथ गुफा में चला गया। वे दोनों बहुत थक गए थे। वे अब सोना चाहते थे।

चित्रांकन-अशोक शर्मा

लेखन-रुक्मिणी बनर्जी

सड़क पर चलना

एक कुत्ता सड़क पर जा रहा था। बिल्ली भी उसके साथ चलने लगी। अब सड़क पर एक कुत्ता और बिल्ली चल रहे हैं।

ख़रगोश ने उन्हें देखा। वह भी उनके साथ चलने लगा। अब कुत्ता, बिल्ली और ख़रगोश सड़क पर चल रहे हैं।

बकरा अपने घर में था। उसने भी उन्हें जाते हुए देखा। वह भी उनके साथ चल पड़ा। अब कुत्ता, बिल्ली, ख़रगोश और बकरा सड़क पर चल रहे हैं।

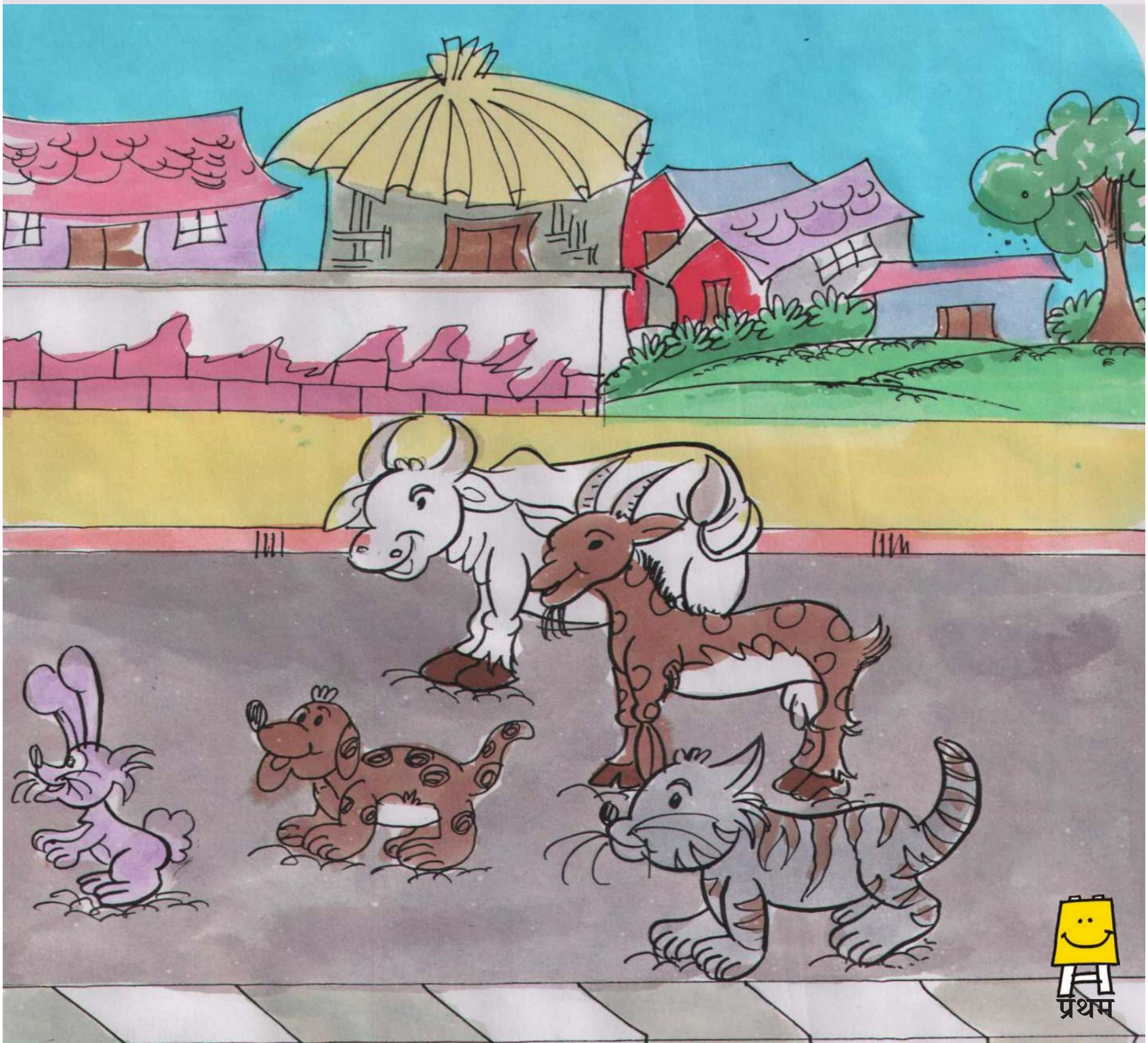

गाय मैदान में घास चर रही थी। उसने गर्दन उठाकर उन्हें देखा। उसने सोचा कि ये कहाँ जा रहे हैं? मैं भी इनके साथ जाऊँगी। अब सड़क पर कुत्ता, बिल्ली, ख़रगोश, गाय और बकरा चल रहे हैं।

वे सभी सड़क से नीचे उतरे। वे एक बड़े पेड़ के नीचे पहुँच गए। वे सभी उसके नीचे बैठ गए और उन्होंने खाना खाया।

चित्रांकन-अशोक शर्मा

लेखन-रुक्मिणी बनर्जी

मुर्गी के चूज़े

अंडे से निकले हैं मुर्गी के चूज़े। नरम, मुलायम गोलमटोल चूज़े। छोटे-छोटे पैरों पर वे इधर-उधर चलते हैं। मुर्गी हमेशा उनका ख़्याल रखती है।

मुर्गी मिट्टी कुरेदती है। चूज़े उस मिट्टी में खाना ढूँढते हैं। चावल के दाने, गेहूँ के दाने और छोटे-छोटे कीड़े। चूज़े यही सब खाते हैं। ऐसे ही वे धीरे-धीरे बड़े होते हैं। मगर यह क्या? उन चूज़ों पर सियार की नज़र

है। सियार के मुँह से लार टपक रही है, ''चूज़े कितने लज़ीज़ होंगे!'' मुर्गी हमेशा चूज़ों को समझाती रहती है, ''एक साथ रहना और चारों तरफ़ नज़रें गड़ाए रखना। सियार दिख जाए तो एक साथ आवाज़ लगाना। यह समझ लो कि मैं पास में ही हूँ। कभी डरना मत।''

चूज़े एक साथ ही रहते हैं। खाना खाते हैं। पंख फड़फड़ाते हैं। कुकड़ू-कू करते हैं। दूर से सियार उन पर नज़रें गड़ाए है। वह ताक में है कि कब मौक़ा मिले और झपट्टा मारे।

चित्रांकन : गरिमा चौहान

लेखन-प्रथम

अमन और इशा

दो भाई बहन थे - अमन और इशा। दोनों शाम में खेलने के लिए बग़ीचे में गए। खेलते-खेलते इशा के पैर में गोबर लग गया। इशा रोने लगी, "भैया-भैया मेरे पैर में गोबर लग गया!" अमन ने कहा, "चुप हो जा इशा! पास में तालाब है चलकर धो लेते हैं।" दोनों तालाब के पास गए। इशा ने जैसे ही अपना पैर तालाब में डालना चाहा एक सुनहरी मछली किनारे आ गई और बोली, "तुम्हारे सिर्फ़ पैर में गोबर लगा है तो तुम्हें इतनी तकलीफ़ हो रही है। अगर यह गोबर पूरे तालाब में फैल गया तो

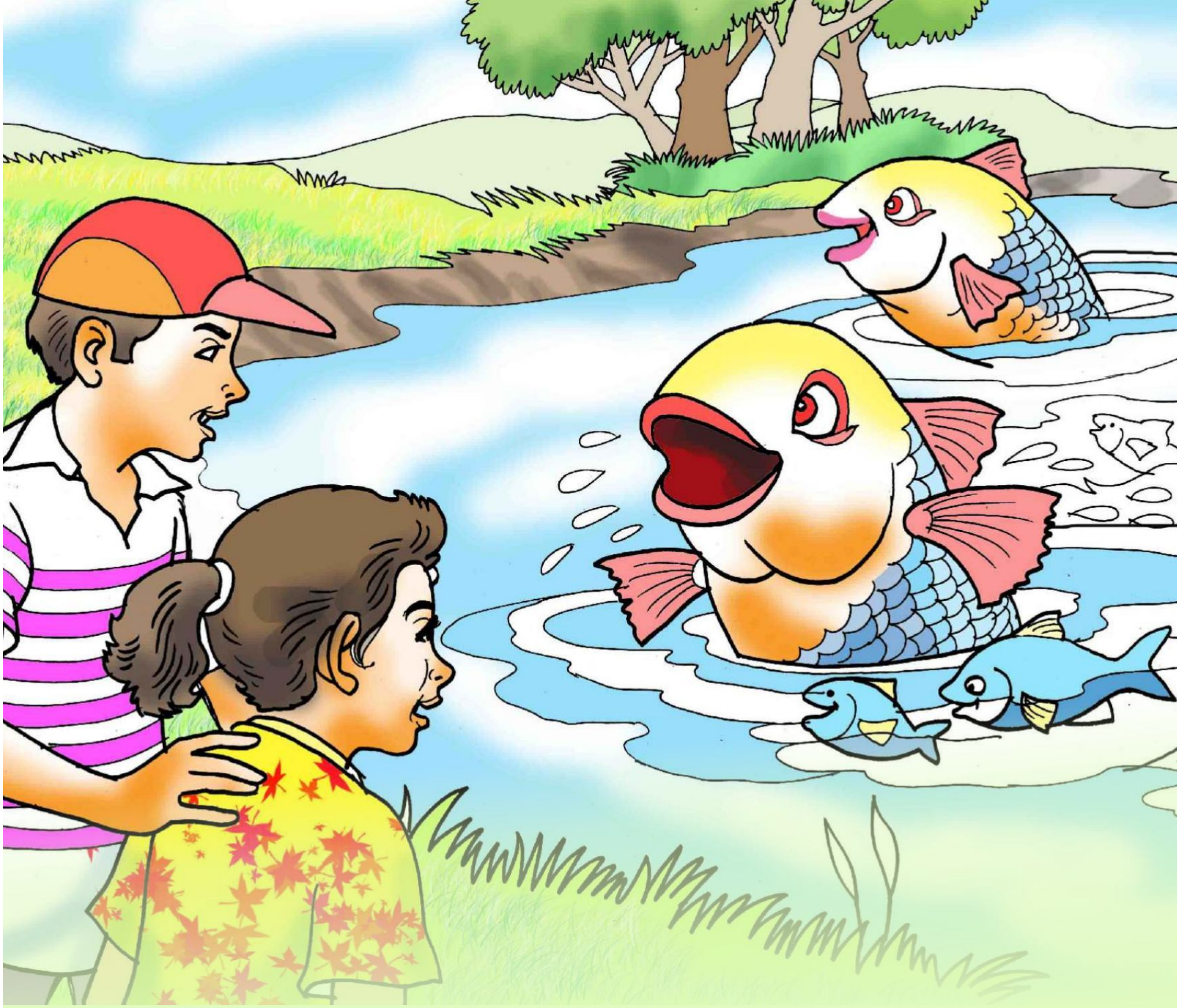

मुझे और दूसरी मछलियों को कितनी तकलीफ़ होगी, यह सोचा है?"
अमन-इशा को बात समझ में आ गई। उन्होंने मछली से माफ़ी माँगी और वादा किया कि वे किसी दूसरे को भी तालाब गंदा नहीं करने देंगे। मछली ख़ुश हो गई। अब अमन और इशा के कई दोस्त थे - तालाब की सारी मछलियाँ।

चित्रांकन : पार्थो सेन

लेखनः- शाहिद अनवर

बुझाई प्यास

चींटियाँ घूमने निकलीं। वे चलती गईं, चलती गईं। शाम हो गई। अब वे एक पेड़ के नीचे थीं। सब प्यासी थीं। पेड़ पर एक मकड़ी थी। उसने बताया, ''तालाब बहुत दूर है। लगातार चलती रहोगी तो भी तीन दिन बाद ही पहुँचोगी।''

अब क्या होगा? चींटियाँ एक दूसरे से यही पूछ रही थीं। मकड़ी ने कहा, ''किसी तरह सुबह तक रुको। मैं तुम्हारी प्यास बुझाऊँगी।'' सब थकी हुई थीं। वे सो गईं।

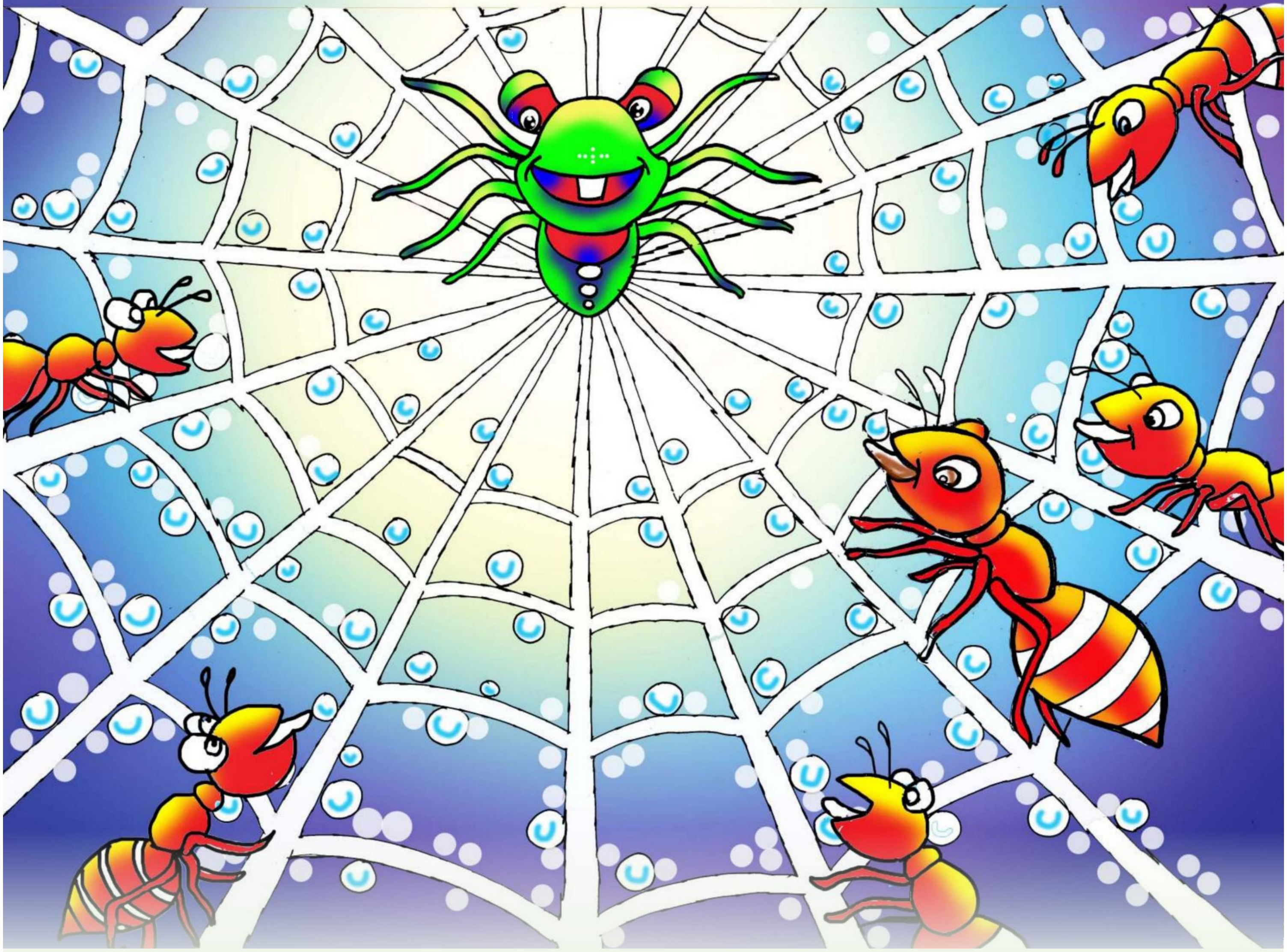

सुबह हुई। मकड़ी का जाला ओस से लदा हुआ था। ओस की बूँदें जाले में लटक रही थीं। मकड़ी ने चींटियों को आवाज़ लगाई। चींटियाँ उठीं और जाले की ओर चल पड़ीं। सबने अपनी प्यास बुझाई। मकड़ी से विदा लेकर चींटियाँ वापिस लौट आईं।

चित्रांकन : पार्थो सेन

लेखनः- मनोहर चमोली 'मनु'

आ गई नींद

चाँदनी रात थी। नदीमा को नींद नहीं आ रही थी। अम्मी उसे कहानी सुनाने लगीं। नदीमा ने पूछा, ''अम्मी! क्या चाँद को जाड़ा लगता है?'' अम्मी हँसते हुए बोलीं, ''हाँ। बेचारा अकेला आसमान में ठिठुरता जो रहता है। चलो, अब सो जाओ।'' नदीमा ने आँखें बंद कर लीं। अम्मी भी सो गईं।

प्रथम

एक भेड़ नदीमा के पास आई और बोली, ''नदीमा। ये लो मेरी ऊन। चाँद के लिए स्वेटर बुन लेना।'' मकड़ी ने कहा, ''स्वेटर मैं बुन देती हूँ।'' मकड़ी ने तुरंत स्वेटर बुन दिया। तोता ने कहा, ''आओ चलें। हम चाँद को स्वेटर दे आते हैं।'' नदीमा तोते की पीठ पर जा बैठी। दोनों चाँद को स्वेटर देने के लिए चल पड़े। अचानक नदीमा की आँख खुल गई। उसने खिड़की से बाहर झाँका। चाँद हँस रहा था। नदीमा को भी हँसी आ गई। अब वह चैन से सो गई।

चित्रांकन : पार्थो सेन

लेखनः- मनोहर चमोली 'मनु'

एक ज़रूरत

गर्मी के दिन थे। काजल को प्यास लगी। वह पानी पीने लगी। तभी उसकी नज़र ज़मीन पर पड़ी। वहाँ एक चिड़िया थी। काजल उसे घर ले आई। माँ ने चिड़िया को पानी पिलाया। कुछ ही देर में चिड़िया ठीक हो गई। काजल उसे छत पर छोड़ आई। फिर उसने माँ से पूछा-चिड़िया को क्या हुआ था? माँ ने बताया, ''गर्मी के कारण वह बेहोश हो गई थी। शायद उसे पानी नहीं मिला था।'' काजल ने माँ से पूछा, ''क्या, पानी के बिना ऐसी ही हालत हो जाती है?'' माँ ने बताया, ''हाँ, बहुत से पक्षी गर्मी में

पानी नहीं मिलने के कारण प्यासे मर जाते हैं।'' ''तब तो हमें उनकी मदद करनी चाहिए।'' काजल ने कहा। ''करना तो चाहिए, मगर कैसे?'' माँ बोलीं। ''अपनी छत पर पानी रखकर।'' काजल पूरे विश्वास से बोली। माँ यह सुनकर मुस्करा दीं।

चित्रांकन : गरिमा चौहान

लेखन:- विनोद कुमार बैरवा

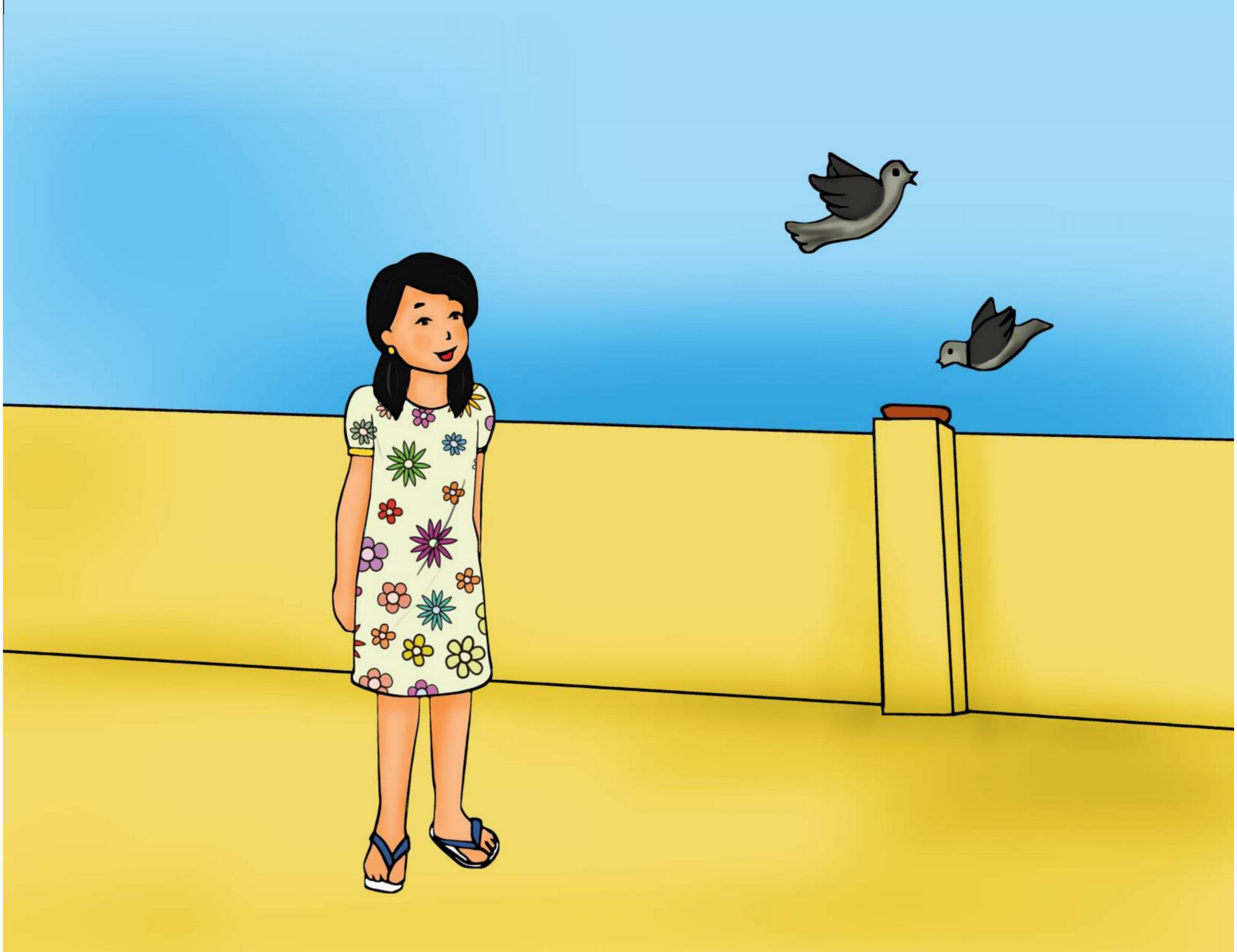

मिट्टी का घर

सोनू का कोई दोस्त नहीं था। वह रोज़ नदी किनारे खेलने जाता था। मोनू उसके पड़ोस में रहता था। सोनू को देख कर एक दिन मोनू भी नदी किनारे गया। सोनू वहाँ मिट्टी का घर बना रहा था। मोनू को ये खेल बहुत मज़ेदार लगा। मोनू ने भी मिट्टी से घर बनाने की कोशिश की। वह घर नहीं बना पाया। उसका घर कभी फूट जाता था। कभी ढह जाता था।

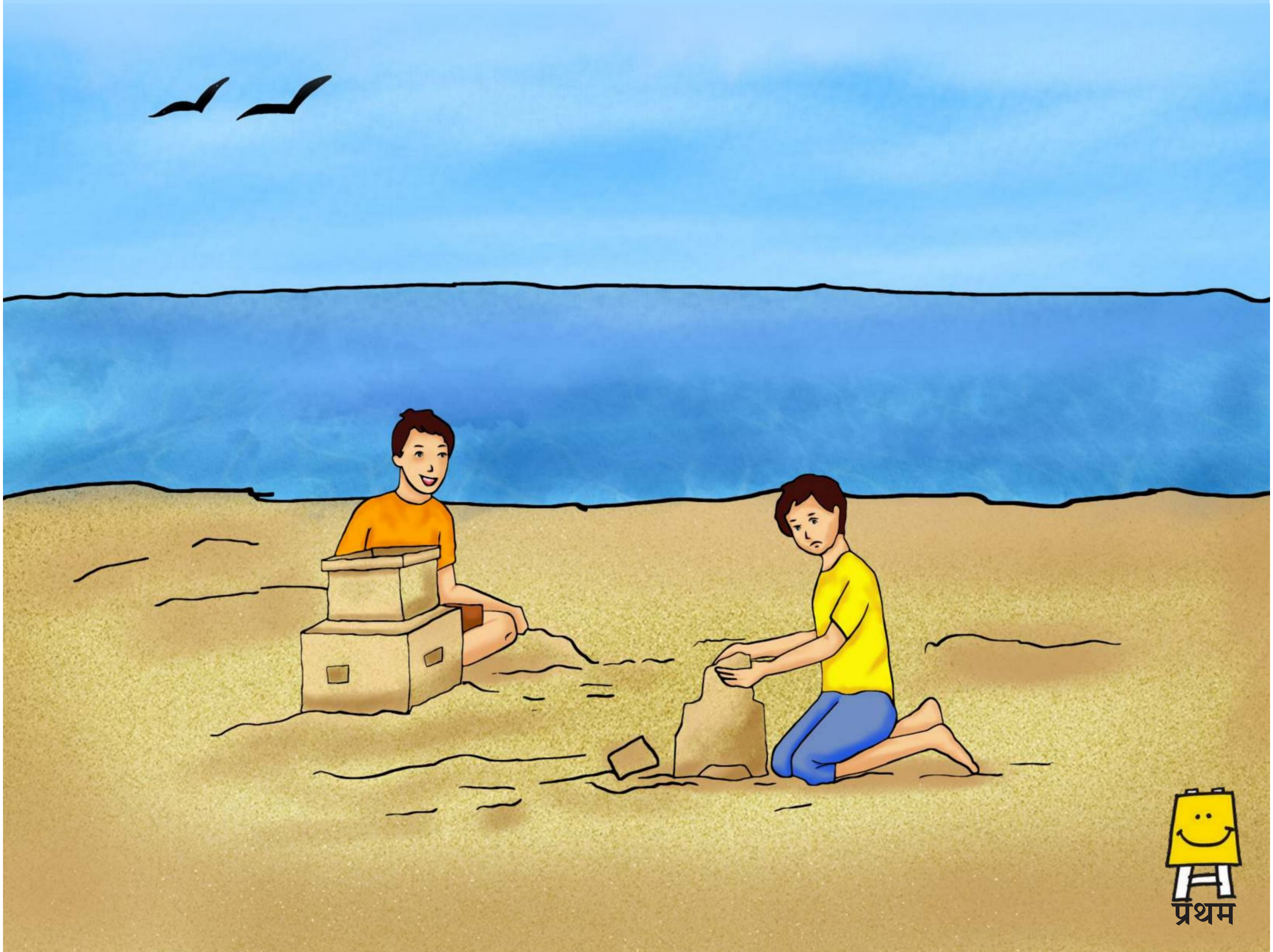

प्रथम

सोनू ये सब देखकर हँसने लगा। उसने मोनू से कहा, “हम दोनों मिलकर घर बनाते हैं।” मोनू को भी ये बात जँच गई।

दोनों ने मिलकर घर बनाया। वे दोनों अब दोस्त बन गए हैं। दोनों नदी किनारे साथ-साथ खेलते हैं।

चित्रांकन : गरिमा चौहान

लेखन:- कैलाश प्रसाद मीना

भागा शेर

सभी जंगलवासी इकट्ठा हुए थे। हिरन बोला, ''पक्षी उड़ जाते हैं। कुछ तैर कर अपनी जान बचा लेते हैं। कुछ पेड़ पर चढ़ जाते हैं। लेकिन हम जैसे बस भागकर अपनी जान बचाते हैं। शेर का सबसे पहले भोजन हम जैसे ही बनते हैं।'' घोड़ा बोला, ''हमारी परेशानी बढ़ती ही जा रही है।'' हाथी बोला, ''जीव ही जीव का भोजन है। सालों से ऐसा ही होता आया है।'' बंदर ने कहा, ''एक ही उपाय है। सावधान रहो। सतर्क रहो।'' सब सोच में पड़ गए। ख़ामोशी छा गई। सभी को उदास देख भेड़ बोली, ''हम लाचार हैं। बंदर सही कहता है।''

अचानक एक चींटी बोल पड़ी, ''मेरे साथ चलो। हम मिल-जुलकर शेर से निपटेंगे।'' यह क्या! सैकड़ों चींटियाँ इकट्ठी हो गईं। हज़ारों मकड़ियाँ आ गईं। बिच्छुओं का दल आ पहुँचा। हज़ारों मधुमक्खियाँ आ गईं। आसमान में अंधेरा छा गया। कौओं की कर्कश वाणी से जंगल काँप उठा। हर कोई चींटियों के पीछे-पीछे चल पड़ा। शेर माँद से बाहर निकला। अपनी ओर आते हुए विशालकाय झुंड को देखकर शेर दुम दबाकर भाग गया।

चित्रांकन : पार्थो सेन लेखनः- मनोहर चमोली 'मनु'

सतरंगिया

आज विद्यालय में छुट्टी है। रामा अपने मित्रों के साथ खेलने निकला। राहुल बोला, "आज चोर-सिपाही खेलेंगे।" "नहीं, कबड्डी खेलेंगे," रानी बोली। तभी करीम बोल उठा, "उधर देखो, आसमान में कई रंगों वाला गोला दिख रहा है।" "अरे यह तो हाथी का सूँड है, जो ज़मीन से पानी सोखता है, लगता है ख़ूब बारिश होगी," रिंकी चहक उठी। "नहीं रे! अब बारिश नहीं होगी, हाथी के सूँड ने सारा पानी समुद्र में गिरा दिया है।" रामा बोला, "क्यों, हाथी ऐसा क्यों करेगा?"

बच्चों का शोर सुनकर वहाँ रामू दादा पहुँच गए। "क्या हो रहा है?" बच्चों ने उनको सारा क़िस्सा सुना डाला। रामू दादा हँस पड़े। यह इन्द्रधनुष है।

इसमें सात रंग होते हैं – बैंगनी, नीला, नारंगी, आसमानी, हरा, पीला और लाल।

ये रंग सूर्य की किरणों में मौजूद होते हैं। वर्षा के बाद हवा में पानी की बूँदें लटकती रहती हैं। जब सूर्य की किरणें इन बूँदों को भेदती हुई ज़मीन पर पहुँचती हैं तो ये सातों रंग अलग हो जाते हैं और आकाश में धनुष के आकार में दिखाई देने लगते हैं। इसीलिए हम इसे कहते हैं 'सतरंगिया!' दादा की बात पूरी होने से पहले ही बच्चे चिल्ला पड़े। दादा को भी इंद्रधनुष का यह नया नाम अच्छा लगा।

चित्रांकन : पार्थो सेन

लेखन:– शाहिद अनवर

पी...हू...पी...हू...

एक बार काफ़ी बारिश हो रही थी। मोर मस्ती में नाचे जा रहा था। यह देखकर बादल के मन में शैतानी आई और उसने बरसना बंद कर दिया। बारिश नहीं होने के कारण सभी जीव-जन्तु परेशान हो गए। मोर भी नाचना भूल गया। सभी ने बादल से आग्रह किया,

"बरसो बादल धड़ाके से
हम मर जाएँगे फ़ाके से"

बादल को रहम आ गया। उसने सोचा अब तक मोर भी नाचना भूल चुका होगा। बादल ने फिर से बरसना शुरू कर दिया। बरसता गया, बरसता गया।

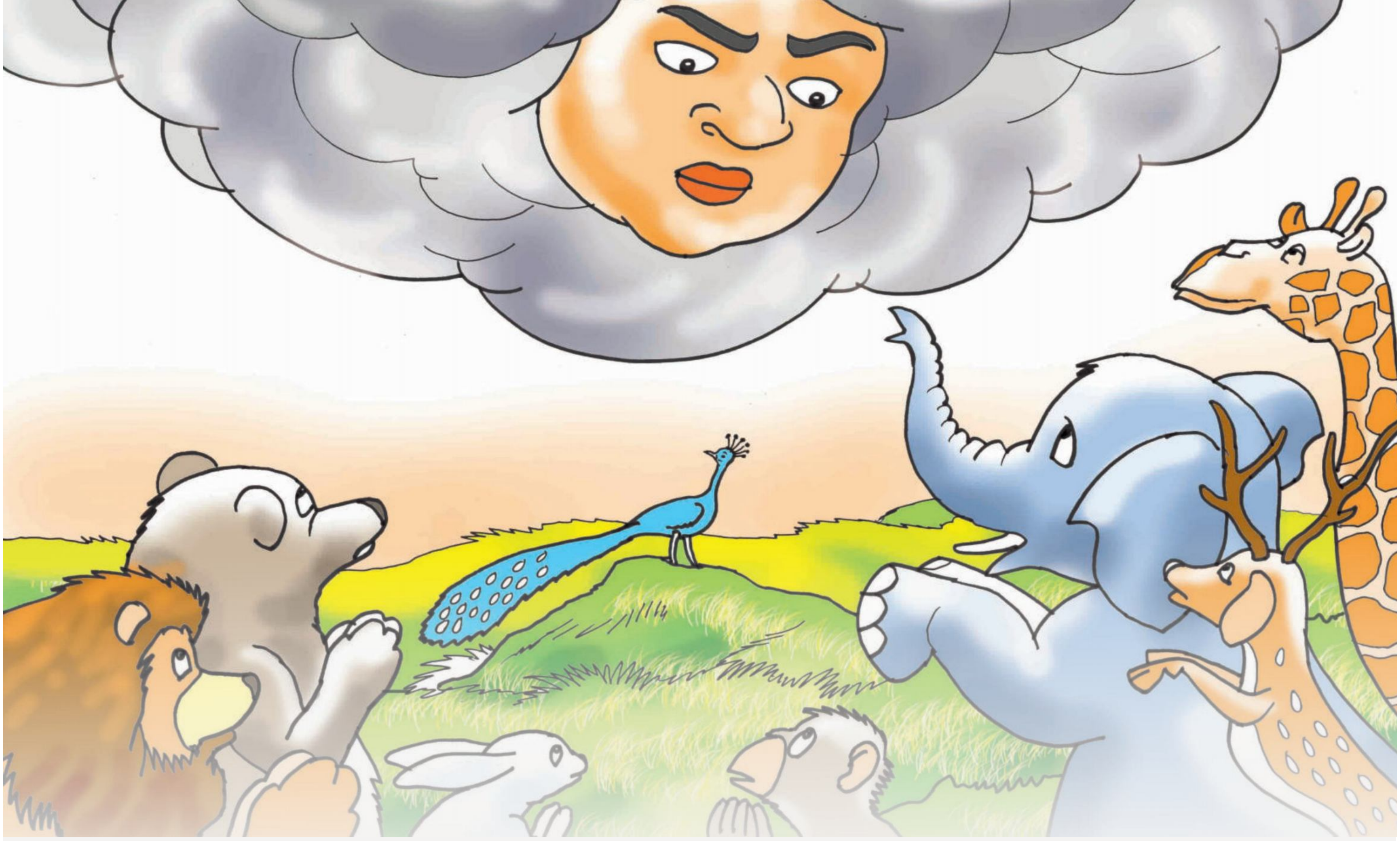

जब रुका तो अचानक उसे एक आवाज़ सुनाई पड़ी – 'पी...हू...पी...हू...' बादल भी चौंक गया और लोग भी। सभी ने आवाज़ का पीछा किया तो देखा कि मोर नाच रहा है... तेज़, तेज़। बादल ने सोचा कि मोर ऐसे नहीं मानेगा, उसे सबक़ सिखाना ही पड़ेगा।

इस बार बादल ने भयानक रूप धारण कर लिया। अब चारों तरफ़ पानी ही पानी था। बादल को लगा कि इस बार तो मोर बह ही गया होगा। उसने नीचे झाँका तो एक ऊँचे से पेड़ पर चमकते हुए पंख दिखाई पड़े। अरे यह क्या ... तने पर मोर अपने पंख फैलाए अब भी नाच रहा था। नृत्य के प्रति मोर का यह प्रेम देखकर बादल मन ही मन मुस्करा पड़ा। उसने बरसना बंद कर दिया। सारे जीव-जन्तुओं ने राहत की साँस ली। मोर ने भी बादल की ओर गर्दन उठाकर देखा और आवाज़ लगाई, 'पी...हू...पी...हू...!'

चित्रांकन : पार्थो सेन

लेखन:- शाहिद अनवर

पहली यात्रा

माँ सो रही थी। नन्ही चींटी बिल से बाहर निकल आई। पहली बार बिल से बाहर आना उसे अच्छा लग रहा था। दस क़दम आगे चलकर उसे अंगूर का एक दाना मिला। ''ये इतना बड़ा क्या है? इसे हिलाती हूँ।'' चींटी ने ज़ोर लगाया। उसने अंगूर पर अपने डैने चुभा दिए। अंगूर का छिलका फट गया। रस तेज़ी से बाहर निकल पड़ा। चींटी रस में बह गई। बड़ी मुश्किल से वह अपने आप को संभाल पाई, ''लगता है बाढ़ थी। मैं तो डूब ही जाती। बच गई।'' चींटी कुछ देर बैठी रही फिर आगे बढ़ गई। आगे उसे हवा से भरा एक गुब्बारा मिला।

प्रथम

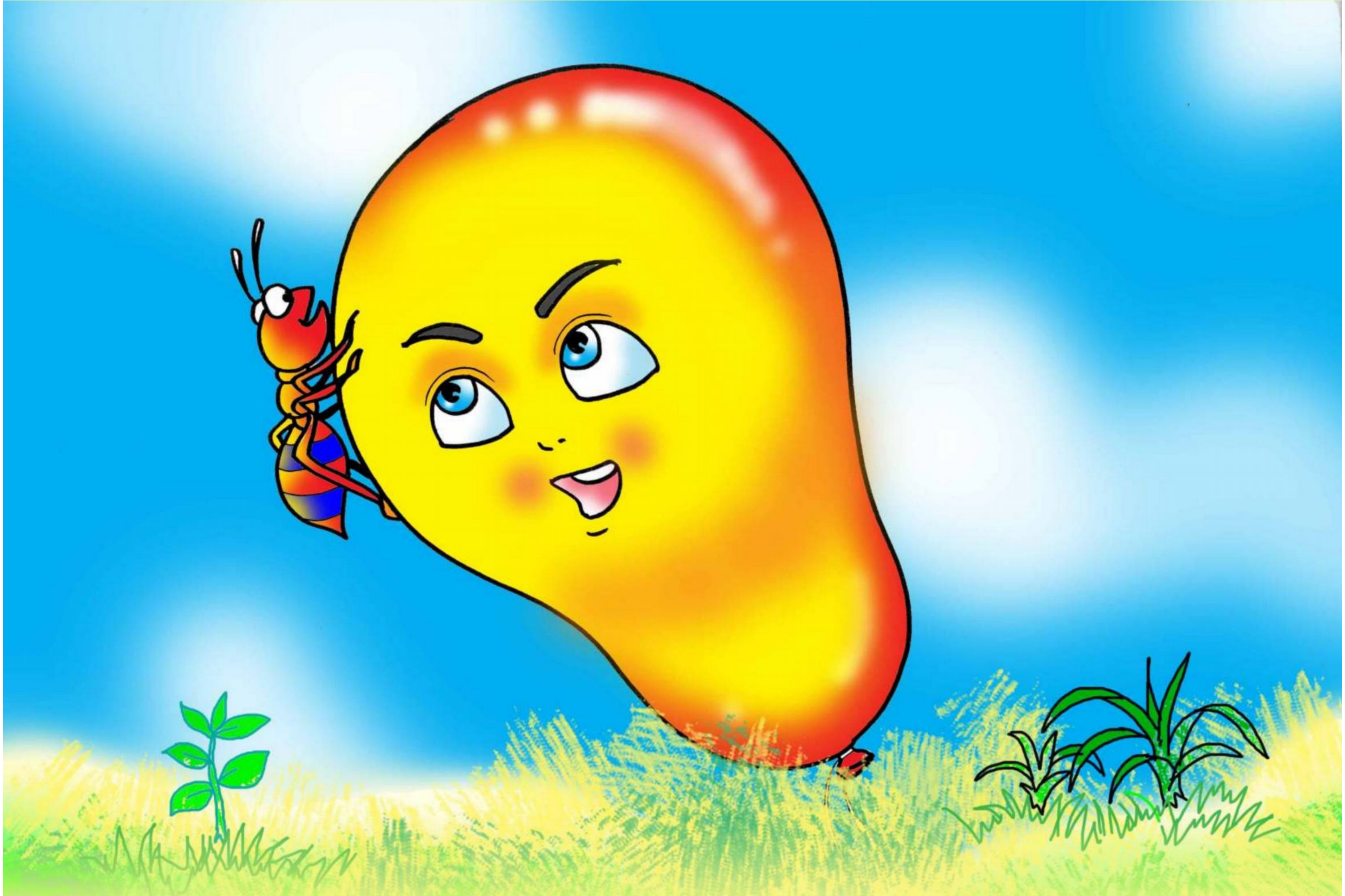

वह हवा से हिल रहा था। ''ये तो हिल रहा है। इससे बचना होगा।'' चींटी गुब्बारे को देखने लगी। चींटी ने गुब्बारे से पूछा, ''कौन हो तुम? मेरे रास्ते से हटो।'' गुब्बारा कुछ नहीं बोला। चींटी गुब्बारे के पास जा पहुँची। वह बुदबुदाई, ''इसे टटोलती हूँ।'' चींटी ने अपने डैने गुब्बारे पर चुभा दिए। 'फटाक' की आवाज़ आई। गुब्बारा फट पड़ा। गुब्बारे की हवा ने चींटी को उछाल दिया। चींटी चीख़ पड़ी, ''लगता है ये आँधी थी।'' चींटी धड़ाम से नीचे गिरी। वह सीधे बिल में जा गिरी थी। माँ ने पूछा तो उसने बताया, ''मैं बाढ़ और आँधी से बचकर आ रही हूँ।'' माँ हँसी और बोली, ''थक गई हो। आराम कर लो।'' नन्ही चींटी माँ से लिपट गई।

चित्रांकनः पार्थो सेन

लेखनः- मनोहर चमोली 'मनु'

आया मज़ा

टुली, कुनी, जनू और कनू पहली बार बाहर घूमने निकले थे। टुली ने कहा, ''मज़ा आ रहा है, मगर डर भी लग रहा है।'' तभी कुनी चिल्लाया, ''ये चिपचिपा क्या है?'' सब दौड़कर आए और छू कर देखने लगे। जनू ने चख कर बताया, ''अरे! यह तो गुड़ है। मीठा है। बस चिपकना मत।'' सबने गुड़ खाया। गुड़ खाकर सब आगे बढ़े। धान का खेत आया। कनू चीख़ा, ''अब यह क्या?'' जनू बोला, ''यह धान की बालियाँ हैं।'' कुनी बोली, ''चलो इसका छिलका उतारते हैं।'' सभी छिलका उतारने लगे। ''अरे, यह तो चावल है!'' कनू बोला। सबने मिलकर चावल खाया और आगे बढ़े।

गेहूँ के बीज मिले। उनमें से एक बीज डरा हुआ था। वह मिट्टी से भरा था। मनु ने पूछा, ''अब यह क्या है?''

प्रथम

कनू ने बताया, ‘‘ये बीज है। चलो इसका छिलका उतारते हैं।’’ कपास का पौधा डरते-डरते बोला, ‘‘यह बीज मेरा है। इसे छोड़ दो।’’ टुली ने पूछा, ‘‘तुम कौन हो?’’ पौधा बोला, ‘‘मैं कपास हूँ। कभी मैं भी बीज था।’’

अचानक आसमान में बादल छाने लगे। बिजली चमकने लगी। गड़गड़ाहट हुई। सब डर गए। पौधा बोला, ‘‘बारिश आने वाली है।’’ कुनी ने कहा, ‘‘ऊ! अब क्या होगा?’’ जनू ने कहा, ‘‘अब तो हम भीग जाएँगे। हम बह भी सकते हैं।’’ पौधे में कपास के फूल खिले थे। फूल रुई से भरे हुए थे। पौधे ने उन्हें पास बुलाया और बोला, ‘‘मेरे फूलों की रुई नर्म और गर्म है। तुम सब भीतर आ जाओ।’’ सब ख़ुश हो गए। सब रुई में घुस गए और सो गए।

चित्रांकन : पार्थो सेन

लेखनः- मनोहर चमोली ‘मनु’

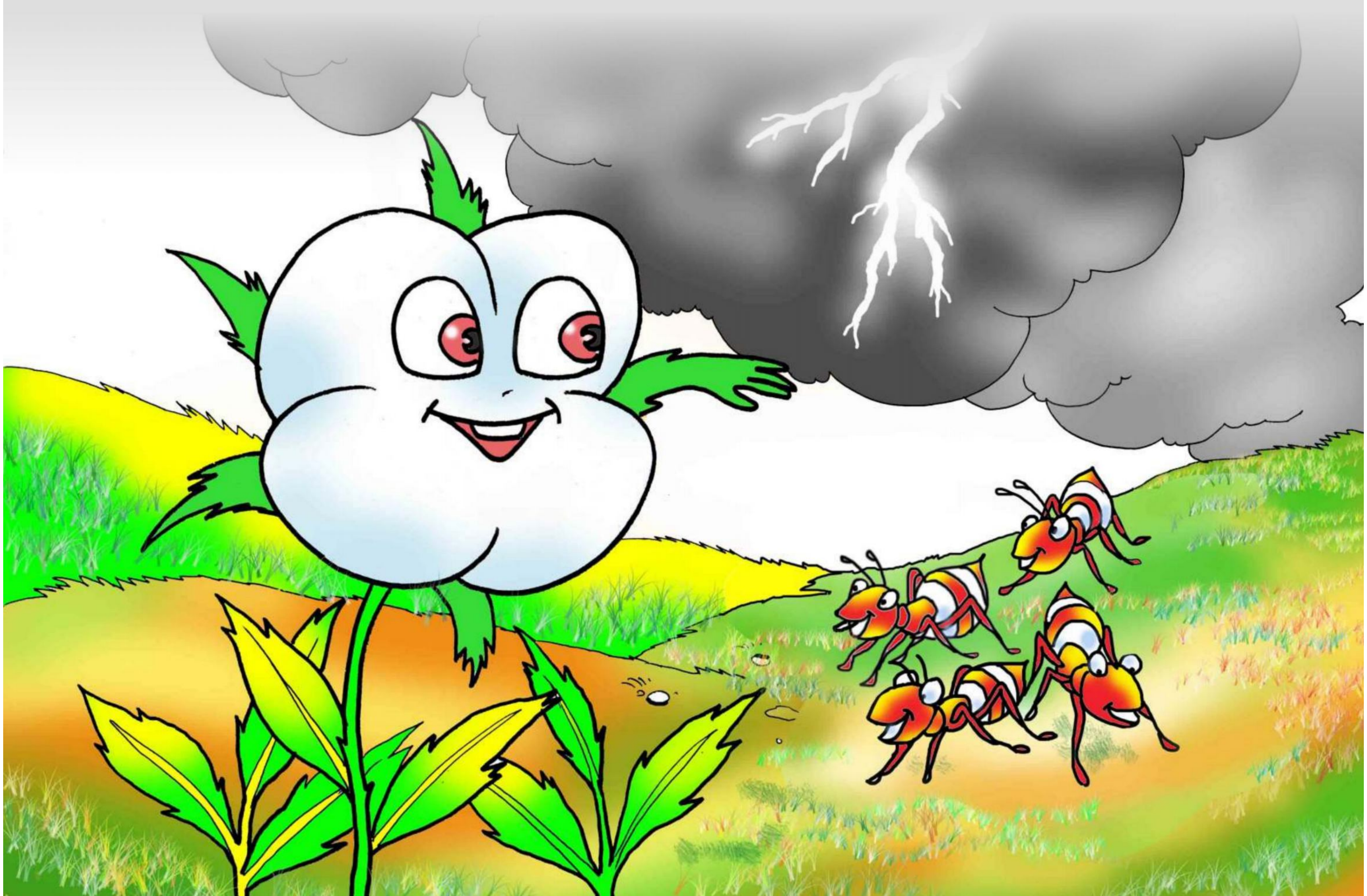

भालू और शहद

भालू ने आवाज़ लगाई, ''सुना है कि तुम फलों के रस से शहद बनाती हो? मैंने आज तक शहद नहीं खाया है। शहद मीठा होता है। ज़रा चखाना।'' रानी मधुमक्खी ने कहा, ''अभी तो हम छत्ता बना रहे हैं। छह कोने वाले सैकड़ों कमरे बनाएँगे। बच्चों को पालने और शहद रखने के लिए बहुत बड़ा छत्ता बना रहे हैं। तब हज़ारों फूलों से बूँद-बूँद रस जमा करेंगे। उसके बाद शहद तैयार होगा।'' भालू चला गया। वह हर रोज़ आता। रानी मधुमक्खी उसे टाल देती।

''अभी तो छत्ते में रस भरा जा रहा है। शहद बन रहा है। शहद चिपचिपा है। बच्चे सो रहे हैं। जाग जाएँगे। बच्चे खाना खा रहे हैं।'' रानी मधुमक्खी ऐसे कई बहाने बनाती। भालू चला जाता। एक तितली भालू

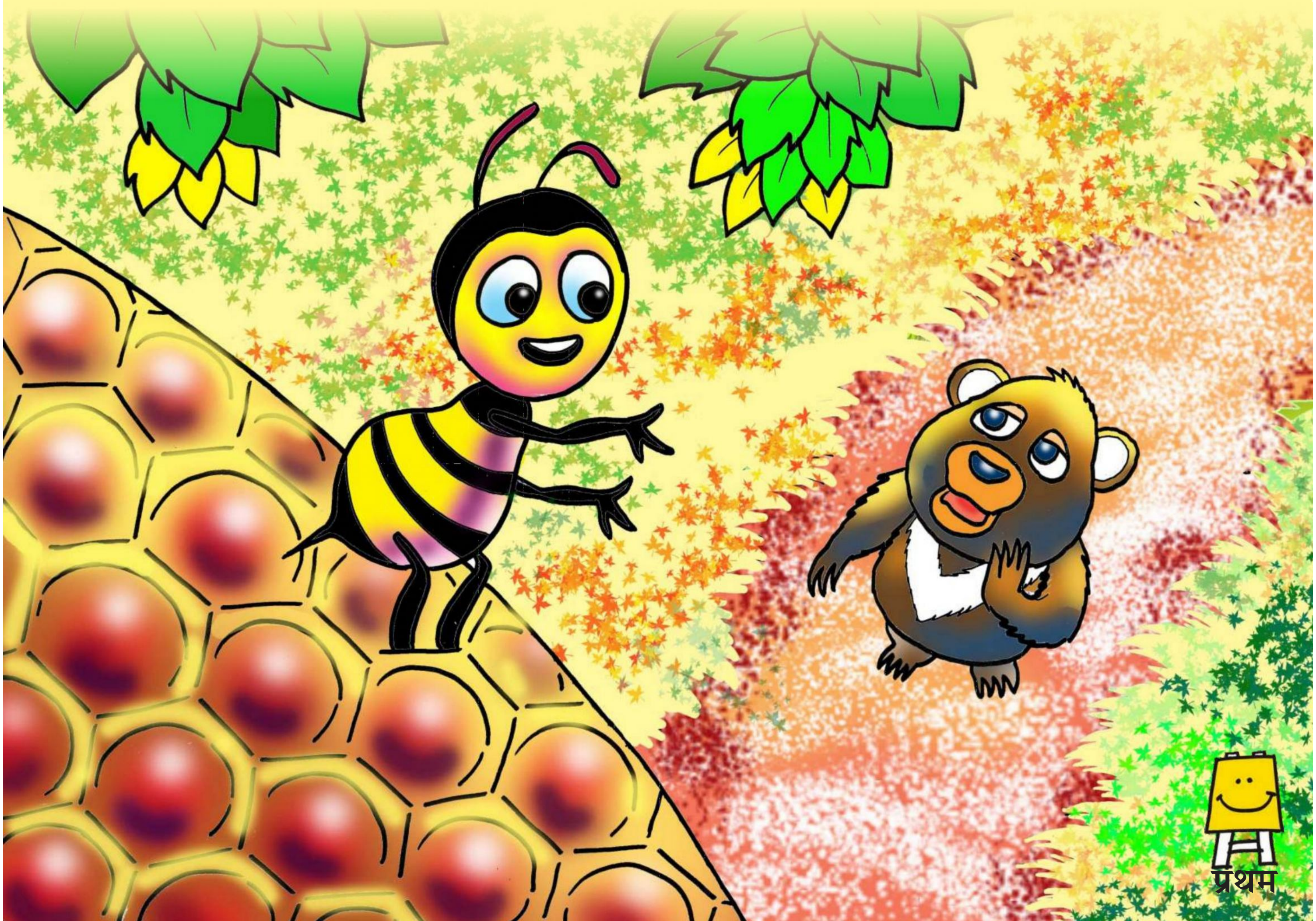

को आते-जाते देखती रहती। एक दिन उसने पूछा तो भालू ने सारी बात बताई। तितली बोली, ''अब तुम शहद भूल ही जाओ।'' भालू दौड़ा। पेड़ पर चढ़ गया। यह क्या! छत्ते में कच्चा मोम ही बचा था। मधुमक्खियाँ शहद बच्चों को खिला चुकी थीं। बच्चों को लेकर वे उड़ चुकी थीं। भालू बौखला गया। वह सोचने लगा, ''मधुमक्खियाँ छत्ता कब बनाती हैं। कैसे बनाती हैं। शहद बनाने में वह कितना समय लेती हैं। यह तो मैं जान ही गया हूँ। अब मैं शहद माँगकर नहीं, छीनकर खाऊँगा।'' बस ! तभी से भालू छत्ता खोजता रहता है। मौक़ा पाते ही छत्ते पर टूट पड़ता है। शहद खाता है। वहीं मधुमक्खियाँ हर आहट पर सावधान रहती हैं। वे शहद को बचाने के लिए किसी पर भी एक साथ हमला कर देती हैं।

चित्रांकन : पार्थो सेन

लेखन- मनोहर चमोली 'मनु'

सवारी हाथी की

‘‘अरे! यह कैसा बिल है?’’ चूहा सोच ही रहा था कि हाथी ने उसे दबोच लिया। हाथी बोला, ‘‘कहाँ घुस रहा है? मेरे कान को बिल समझ रखा है?’’ चूहा काँप उठा। वह बोला, ‘‘हाँ। मुझे यही लगा था। मुझे छोड़ दो। मैं आपके काम आ सकता हूँ।’’ हाथी हँसा और बोला, ‘‘तू! मेरे काम आएगा? चल जा। माफ़ किया।’’

एक दिन हाथी बड़े से गड्ढे में गिर गया। हाथी चिंघाड़ा, ‘‘मेरा मरना तय है।’’ चूहा आसपास ही था। वह बोला, ‘‘मैं कुछ मदद करूँ?’’ हाथी के आँसू आ गए। वह बोला, ‘‘ये मज़ाक़ का समय नहीं है।’’ चूहा बोला, ‘‘मैं मज़ाक़ नहीं कर रहा हूँ। मैं तुम्हें गड्ढे से बाहर निकाल कर ही दम लूँगा।’’

चूहा अपने दोस्तों को बुला लाया। सारे चूहे गड्ढे में मिट्टी डालने लगे। मिट्टी हाथी की पीठ पर गिरने लगी। हाथी ने पूछा, ''मुझे दफ़नाओगे क्या?'' चूहा बोला, ''तुम बस अपनी पीठ हिलाते रहो। पीठ की मिट्टी नीचे गिराते रहो। गहरा गड्ढा भरता जाएगा।''

यह क्या! चूहे मिट्टी खोद-खोद कर गिराते रहे। हाथी पीठ हिलाता रहा। मिट्टी गड्ढे के तल पर गिरती रही। गड्ढा मिट्टी से भरने लगा। चूहों की मेहनत रंग लाई। हाथी गड्ढे से बाहर आ ही गया। हाथी ख़ुश हो गया। वह बोला, ''मैं सोच भी नहीं सकता था कि चूहे मुझे गड्ढे से बाहर निकाल सकेंगे। आओ, खुशियाँ मनाएँ।'' चूहे हाथी की पीठ पर बैठ गए। चूहे कहते, ''हाथी घोड़ा पालकी।'' हाथी जवाब देता, ''मिट्टी नीचे डाल दी।'' हाथी भी ख़ुश। चूहे भी ख़ुश।

चित्रांकन : पार्थो सेन

लेखन- मनोहर चमोली 'मनु'

आप सब अच्छे हैं

एक तितली रो रही थी। वह आसमान में उड़ना चाहती थी। वह छोटी उड़ान ही भर पाती थी। वह दूर उड़ने की कोशिश करती तो थक जाती। गिद्ध ने कहा, ''रोना बंद करो। मेरे पैर में बैठ जाओ।'' तितली काँपने लगी और बोली, ''तुम पंख फड़फड़ाओगे तो मैं डर जाऊँगी। तिनके की तरह उड़ जाऊँगी।'' बया ने कहा, ''तुम मेरा घोंसला ले लो। गिद्ध उसे पंजों में पकड़ लेगा। तुम घोंसले में बैठकर दुनिया की सैर करना।'' तितली ने हँसते हुए कहा, ''यह ठीक रहेगा। लेकिन...''

गिद्ध ने पूछा, ''लेकिन क्या?'' तितली बोली, ''बारिश आ गई तो? मुझे भीगने से ज़ुकाम हो जाता है।'' गिद्ध ने हँसते हुए कहा, ''मेरे पंख किसी

छतरी से कम नहीं।'' तितली भी हँसने लगी। तितली हँसते हुए बोली, ''अरे हाँ। यह ठीक है, लेकिन...'' बया ने पूछा, ''फिर लेकिन?'' तितली ने कहा, ''मुझे भूख लगेगी तब क्या होगा?'' बया ने सुझाया, ''तुम फूलों का रस जमा कर लो।'' तितली बोली, ''हाँ, यह ठीक रहेगा, लेकिन...'' गिद्ध ने पूछा, ''अब क्या?'' तितली कहने लगी, ''मैं फूलों का रस जमा कैसे करूँगी? कई दिन यूँ ही बीत जाएँगे।'' रानी मधुमक्खी अब तक चुप थी। वह बोली, ''तुम मेरा छत्ता ले जाओ। इसमें ख़ूब सारा शहद है।'' तितली ख़ुश हो गई। कहने लगी, ''यह ठीक है। अब आएगा मज़ा! आप सब बहुत अच्छे हैं।''

चित्रांकन : पार्थो सेन

लेखन–मनोहर चमोली 'मनु'

बातों में न आना जी

एक समय था जब पानी में मछली तैरती भी थी और आसमान में उड़ती भी थी। सब उसे चाहते थे। वह सभी के अंडों और बच्चों की देखभाल करती थी। एक दिन साँप ने कहा, ‘‘दूसरों के काम आती हो। कोई तुम्हें धन्यवाद भी कहता है?’’ मछली साँप की बात में आ गई।

सुबह हुई। बगुले और मोर ने मछली से अपने अंडों की देखभाल करने के लिए कहा। गिलहरी और चुहिया ने भी अपने बच्चों की देखभाल करने के लिए कहा। लेकिन मछली को न जाने क्या सूझा। वह बिना कुछ कहे आसमान में उड़ गई। साँप ने एक-एक करके सारे अंडों और बच्चों को निगल लिया। शाम होते ही सभी ने मछली को घेर लिया। पूछताछ में साँप

प्रथम

का नाम सामने आ गया। मोर ने कहा, ''साँप को तो अब मैं नहीं छोड़ूंगा।'' चुहिया ने मछली के पंख कुतर दिए और बोली, ''आज से तू उड़ नहीं पाएगी।'' गिलहरी ने कहा, ''अब तू सिर्फ़ जल में ही रहेगी। बाहर आने की कोशिश करेगी तो मर जाएगी।'' इतना कहते ही, मछली छिटक कर नदी में जा गिरी। बगुला बोला, ''मैं तुझे पानी में भी नहीं छोड़ूँगा।''

तब से मोर साँप को मार डालता है। बगुला मछली की ताक में रहता है। वहीं मछली के पँख होते हुए भी वह उड़ नहीं पाती। जल में ही रहती है।

चित्रांकन : पार्थो सेन

लेखन- मनोहर चमोली 'मनु'

अपना बसेरा है भला

एक दिन मेंढक को न जाने क्या सूझा। उसने लंबी छलाँग लगाई और पानी से बाहर आ गया। वह चिल्लाया, ''पानी में रहना भी कोई रहना हुआ। हमेशा गीले रहो। अपने लिए नया बसेरा खोजता हूँ।'' वह एक गुफा में जा पहुँचा। गुफा में शेर था। मेंढक शेर से बोला, ''आपका बसेरा बढ़िया है।'' शेर इतराया। कहने लगा, ''तुम चाहो तो यहाँ रह सकते हो।'' मेंढक गुफा में रहने लगा। लेकिन वह कुछ ही देर में उकता गया। शेर गुर्राता जो रहता था। मेंढक आगे बढ़ गया। वह एक बिल में जा पहुँचा। बिल में चूहा था। मेंढक चूहे से बोला,''वाह, वाह! आपका बसेरा तो बढ़िया है।'' चूहा इतराया। कहने लगा, ''तुम चाहो तो यहाँ रह सकते हो।'' मेंढक रहने लगा।

प्रथम

लेकिन वह कुछ ही देर में उकता गया। चूहा कुछ न कुछ कुतरता रहता था। इधर–उधर दौड़ता रहता था। यह क्या ! साँप को अपनी ओर आता देख मेंढक बिल के दूसरी ओर से निकल आया। मेंढक हाँफता–फुदकता हुआ आगे बढ़ गया। उसे एक गौरैया मिली। मेंढक बोला, ''वाह! आपका बसेरा तो बहुत बढ़िया है।'' गौरैया बोली, ''तुम चाहो तो यहाँ रह सकते हो।'' मेंढक बोला, ''ठीक है। मैं बहुत थक गया हूँ, अभी नहाकर आता हूँ।'' मेंढक नहाकर आया तो गौरैया का घोंसला भीग गया। गौरैया के बच्चे चीं–चीं करने लगे। गौरैया दाना लाती तो भी चीं–चीं करते। मेंढक को परेशानी होने लगी। गौरैया से विदा लेकर वह फिर से पानी में जा घुसा। मेढ़क कहने लगा, ''अपना बसेरा सबसे अच्छा है।'' अब मेंढक बाहर कहीं भी, घूमने ज़रूर जाता है लेकिन लौटकर जल में वापिस आ जाता है।

चित्रांकनः पार्थो सेन

लेखनः मनोहर चमोली 'मनु'

उग आए पेड़

यह उस समय की बात है, जब धरती पर दो ही पेड़ थे। एक पर जलेबी और दूसरे पर गुलाब जामुन लगते थे। एक दिन पहला पेड़ बोला, ''हवा से जलेबियाँ गिर जाती हैं। जितनी गिरती हैं, उससे अधिक उग आती हैं। रसभरी जलेबियों का वज़न सहते-सहते मेरे कंधे और हाथ थकने लगे हैं।'' दूसरा पेड़ बोला, ''हवा मेरे गुलाब जामुन भी गिरा देती है। मेरे फल तो बहुत ही नाज़ुक हैं।''

हवा उनकी बातें सुन रही थी। वह नाराज़ हो गई और चुपचाप जाकर कहीं सो गई। धरती में खलबली मच गई। दिन और गर्म होने लगे। पशु-पक्षी नहाते तो उनके बदन का पानी तक नहीं सूखता। दिन में गर्मी होने से सभी पानी अधिक पीने लगे। नदी-तालाब सूखने लगे।

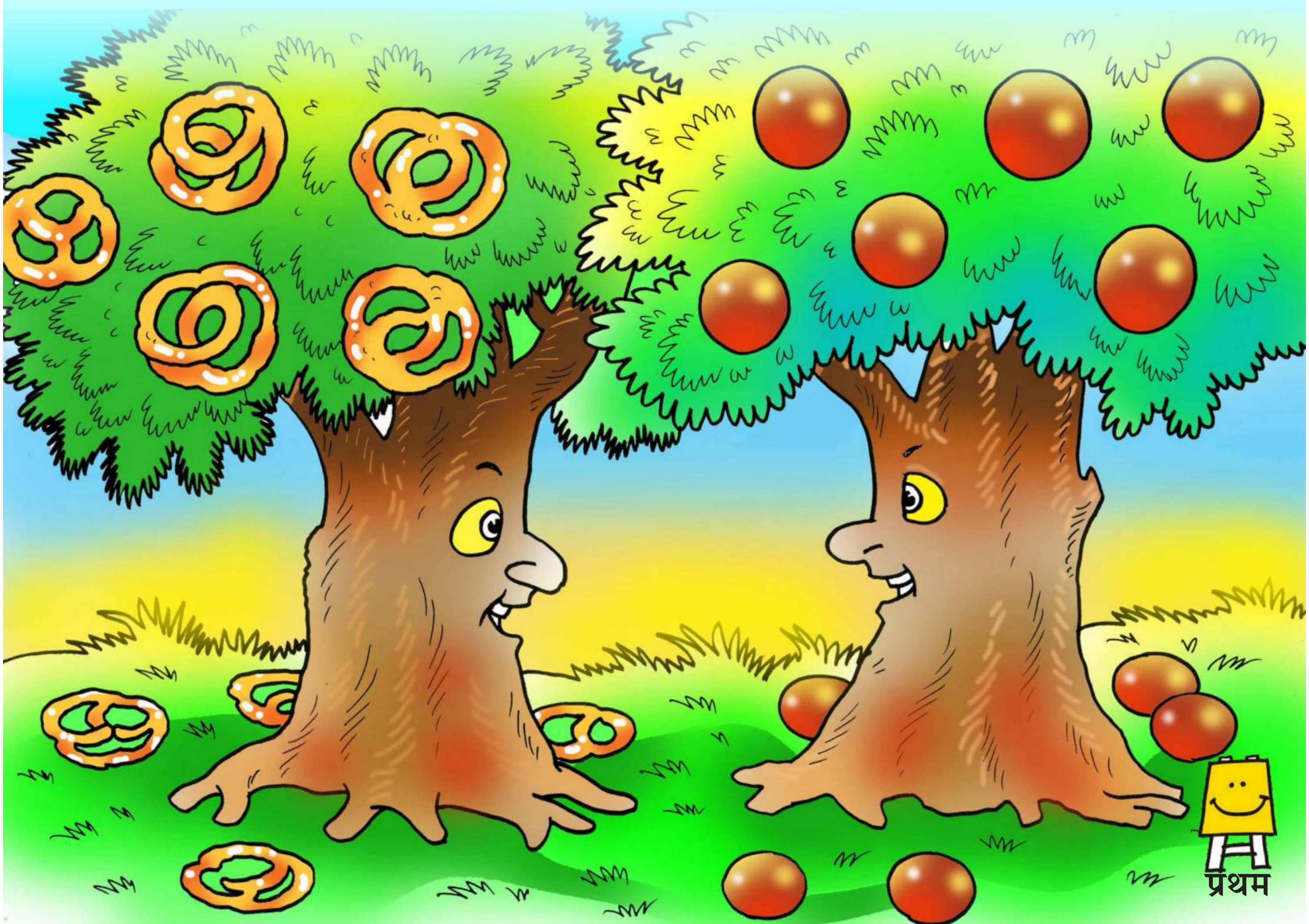

सूरज ने हवा को समझाने की कोशिश की। हवा ने शर्त रखी, ''दोनों पेड़ों को सज़ा मिलनी चाहिए।'' सूरज ने कहा,''जैसा कहोगी, वैसा ही होगा। पहले तुम बहना तो शुरू करो।''

हवा बहने लगी तो सब कुछ ठीक हो गया। सब ख़ुश हो गए। हवा ने पहले पेड़ से कहा, ''अब तुझ पर कभी जलेबियाँ नहीं आएँगी। तुझ पर केवल फल आएँगे। वह गोल नहीं, लम्बे होंगे और वह देर से पकेंगे।'' यह क्या! पल भर में पेड़ केले का पेड़ हो गया। अब हवा दूसरे पेड़ के पास पहुँची और बोली, ''तेरे नाज़ुक गुलाब जामुन कठोर होंगे। इतने कठोर कि खाने से पहले उन्हें फोड़ना होगा।'' तब से जामुन का पेड़ अखरोट का पेड़ हो गया। हवा के पास बहुत सारे बीज थे। उसने वह बीज धरती पर बिखेर दिए। धरती में सैकड़ों तरह-तरह के पेड़ उग आए।

चित्रांकन: पार्थो सेन

लेखन: मनोहर चमोली 'मनु'

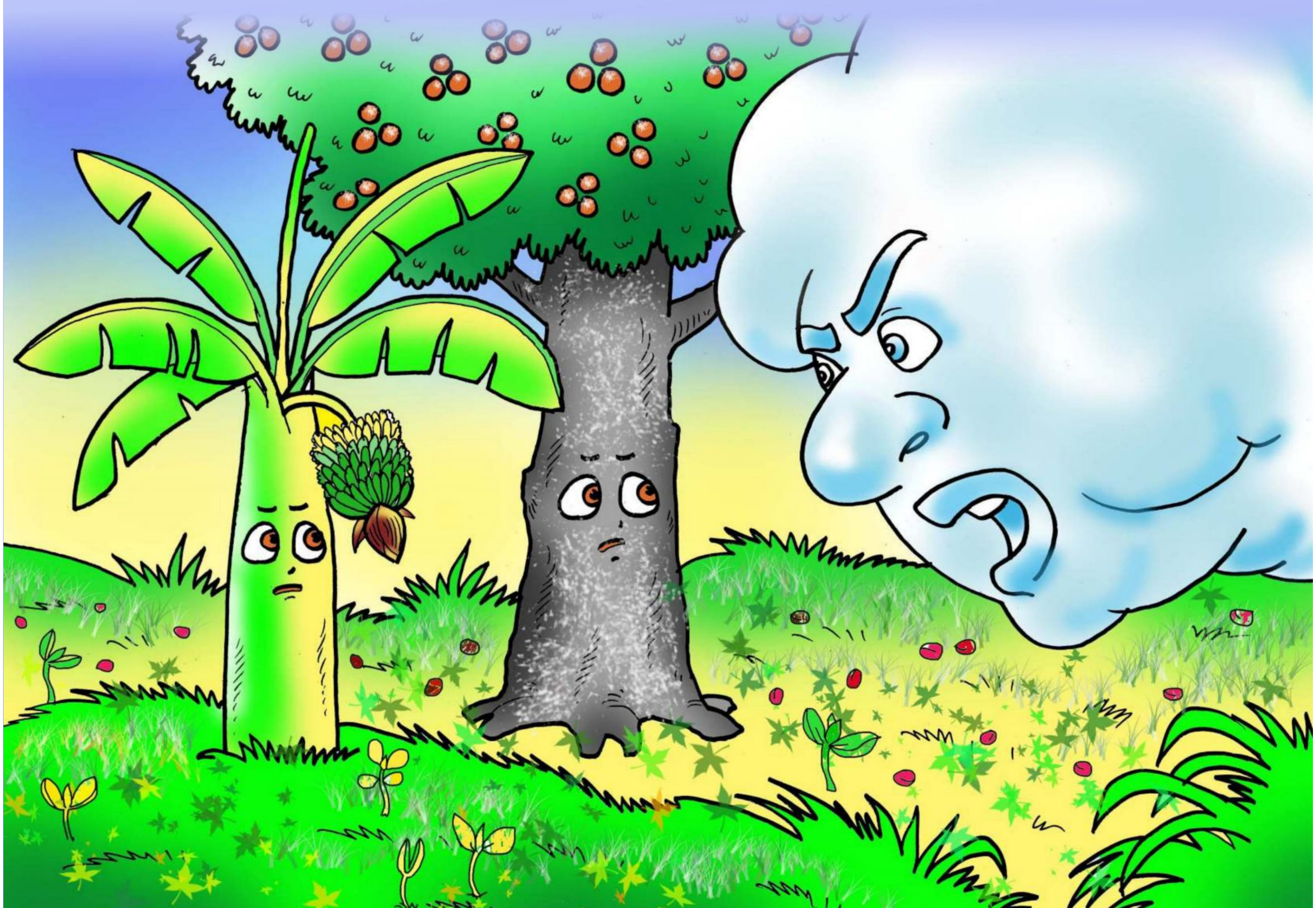

एक बने अनेक

धरती उदास थी। पेड़ ने कहा, ''तुम कहीं घूम कर क्यों नहीं आ जाती?'' धरती ने जवाब दिया, ''तुम भी तो अकेले हो। सूखे हुए हो। हवा में लटके हुए हो।'' पेड़ सोचकर बोला, ''तुम चाहो तो घूम सकती हो। सूरज के चक्कर लगा सकती हो।'' धरती हैरान थी। वह बोली, ''तुम भी चाहो तो हरे हो सकते हो। तुम पर फूल-फल आ सकते हैं। बीज भी आ सकते हैं।'' पेड़ भी हैरान था। धरती बोली, ''तुम अपनी जड़ें मेरी सतह पर जमा सकते हो।'' पेड़ सोचता रहा। थोड़ी देर बाद उसने अपनी जड़ें धरती पर जमा ही लीं। पेड़ ख़ुशी से झूम उठा। वह धरती से बोला, ''एक काम करो। अपने पैरों पर ज़ोर दो और घूमो।'' धरती ने कोशिश की। हवा ने मदद की। धरती घूमने लगी। उसे घूमना अच्छा लगा। पेड़ ने कहा, ''अब

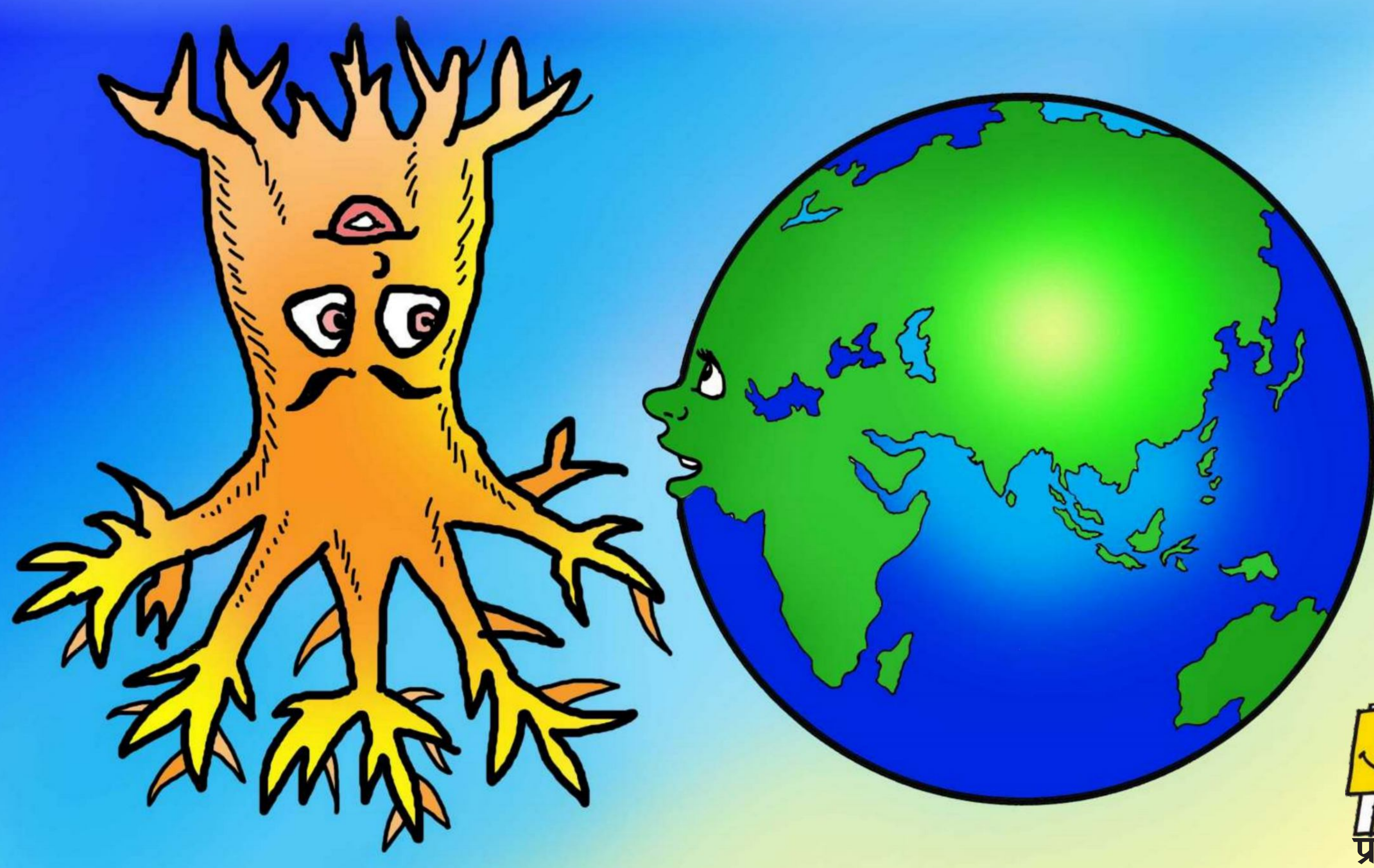

प्रथम

तुम सूरज का चक्कर भी लगा सकती हो।'' धरती ने ऐसा ही किया। एक जगह लटकी हुई धरती घूमने लगी। सूरज का चक्कर लगाने लगी। जो हिस्सा सूरज के सामने रहता, वहाँ धूप रहती और दिन होता है। जिस हिस्से पर सूरज की रोशनी नहीं पड़ती, वहाँ अंधेरा रहता है और रात होती है। वहीं पेड़ पर हरे पत्ते आ गए। फूल आ गए। पेड़ फलों से लद गया। पतझड़ आया। फलों के साथ बीज भी धरती पर गिर गए। चारों ओर बिखर गए। धरती ने बीजों को अपने भीतर समेट लिया। अब धरती पर सैकड़ों पेड़ उग आए। धरती हरी-भरी हो गई। बादल भी बरसने लगे। अब पेड़ अकेला नहीं है। धरती भी उदास नहीं रहती।

चित्रांकनः पार्थो सेन

लेखनः मनोहर चमोली 'मनु'

बड़ा हुआ छोटा

बहुत समय पहले की बात है। तब गिनती एक से नौ तक ही हुआ करती थी। एक दिन उनमें ख़ूब बहस हुई। दो, चार, छह, आठ अलग हो गए। एक, तीन, पाँच, सात और नौ हैरान थे। अंक एक, सबको समझाते हुए बोला, ''मेलजोल में ही ताक़त है।'' आठ ने तुनक कर बोला, ''हमारा जोड़ बढ़िया है। हम हिसाब में भी आसान हैं। दो, चार, छह, आठ। तुम सब बेमेल हो। विषम हो। हम सम हैं।'' तीन ने अपना पक्ष सामने रखा, ''हम संख्या में पाँच हैं। तुम चार हो।'' चार ने तुरंत हिसाब लगाया, ''दो, चार, छह, आठ।'' सात बोला, ''गिन लिया? हमारा जोड़ पच्चीस है। तुम सारे अपनों को जोड़ो तो।'' आठ ने जोड़ा, ''दो, चार, छह और आठ मिलाकर हुए, बीस। अरे !''

अचानक नौ कहने लगा, ''यदि मैं तुम सम संख्याओं में मिल जाऊँ तो तुम्हारा जोड़ उनतीस हो जाएगा। इस तरह मेरे साथियों का जोड़ सोलह ही

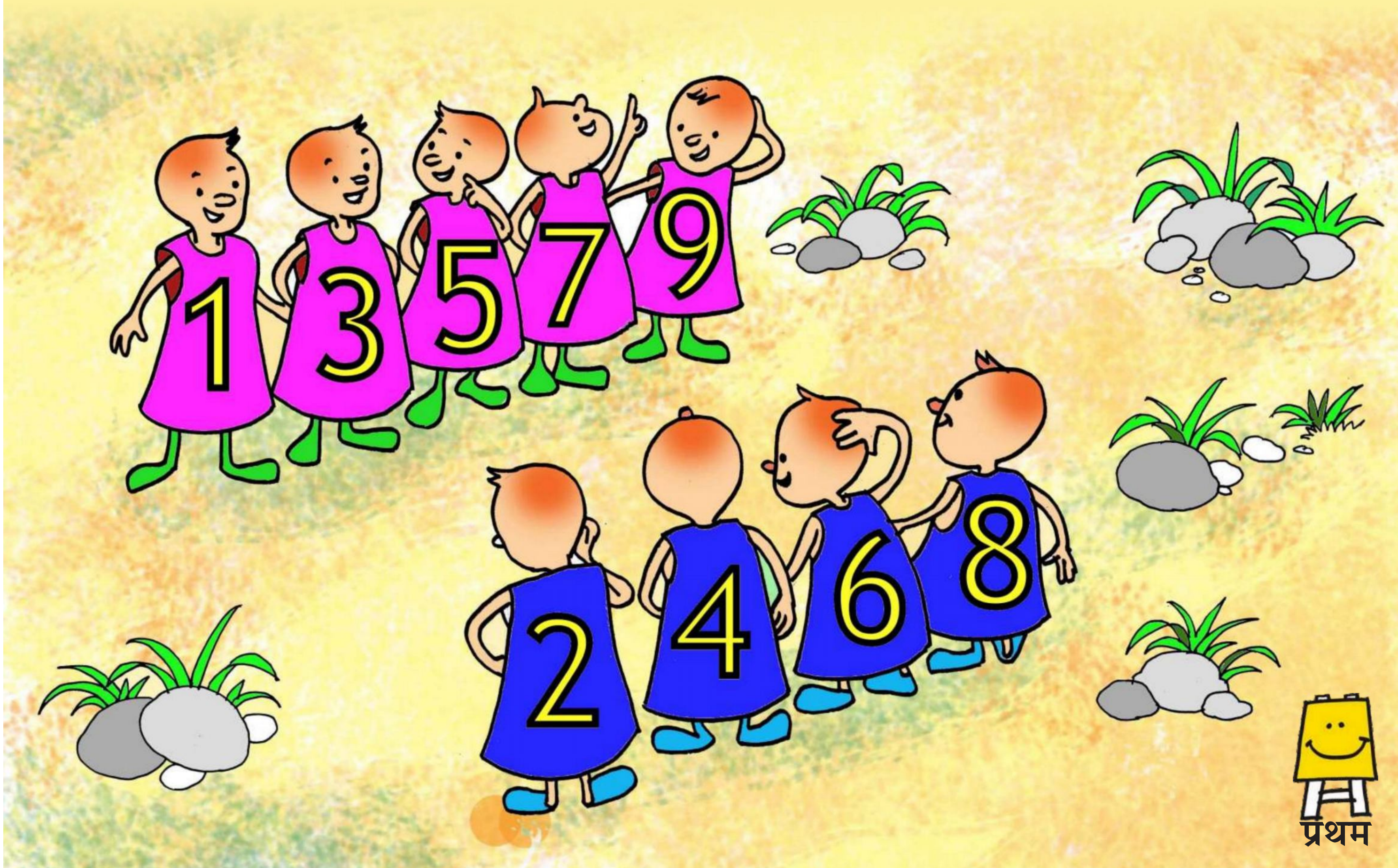

प्रथम

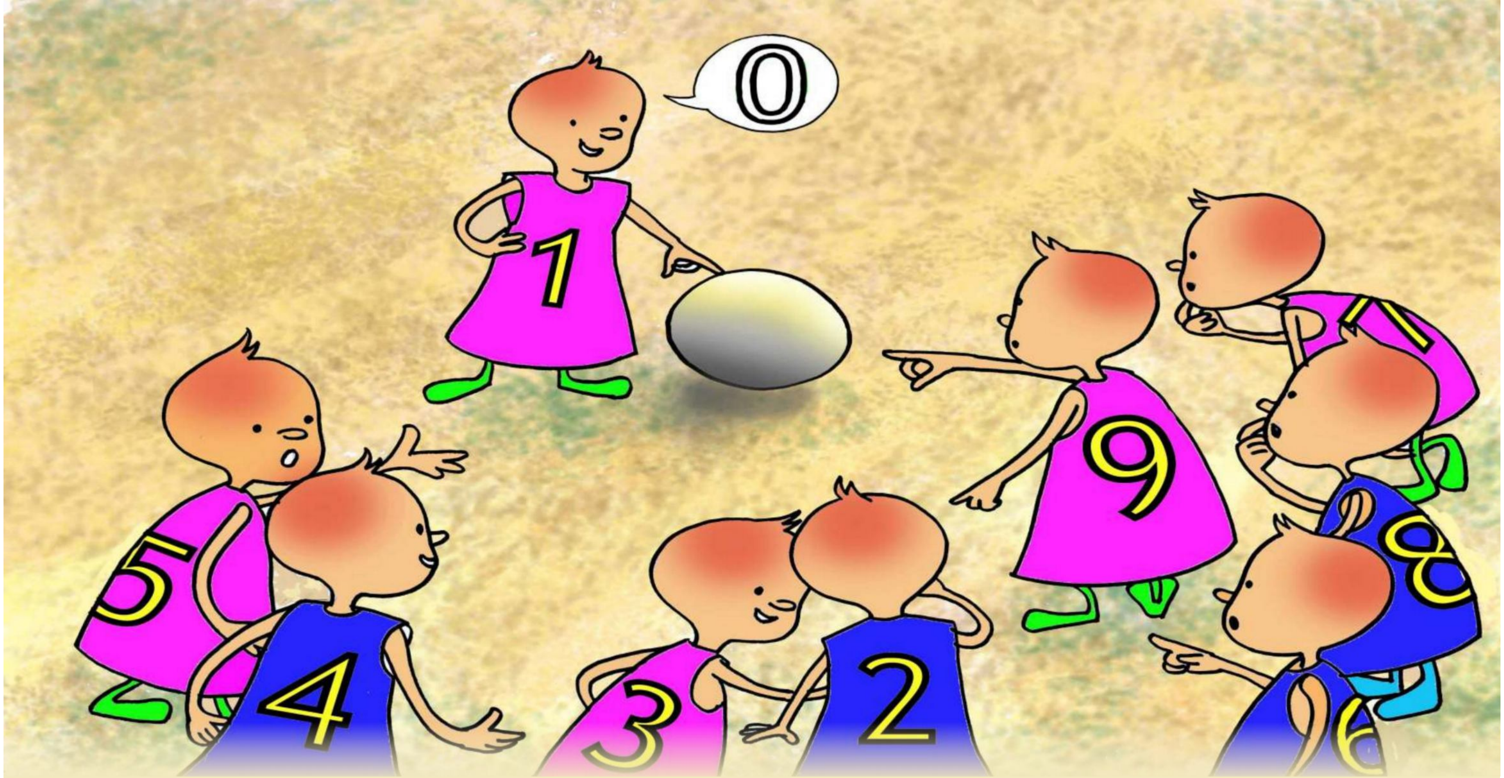

रह जाएगा। हा...हा...हा...।'' आठ ने नौ से कहा, ''घमण्ड मत करो। माना तुम हम सबसे बड़े हो। लेकिन हम छोटे हैं। अगर हम ही न होते तो तुम अकेले क्या कर लेते। हम हैं तो तुम हो।'' एक बोला, ''आठ ने सही कहा। हमें छोटे-बड़े और सम-विषम के फेर में नहीं पड़ना चाहिए।''

नौ ने एक से कहा, ''छोटे होकर ज़ुबान चलाते हो? मैं सबसे बड़ा हूँ। मैं तुमसे नौ गुना बड़ा हूँ। समझे?'' एक को न जाने क्या सूझा। उसने अपने दायीं ओर एक गोल पत्थर रख लिया। नौ ने पूछा, ''ये क्या है?'' एक ने कहा,''ये नया अंक है। इसे हम शून्य कहेंगे। शून्य यानी ज़ीरो। अब मैं एक नहीं दस हो गया हूँ। दस यानी एक दहाई। तुमसे एक क़दम आगे। कुछ समझे?'' सभी अंक घबरा गए। सभी एक से मिल गए। नौ अकेला रह गया। फिर वह भी सबके साथ हो लिया। अब गिनती नौ से आगे बढ़ गई। दस, ग्यारह, बारह,...सौ...एक हज़ार एक....दस हज़ार एक.....एक लाख एक....। तब से गिनती आगे बढ़ती ही जा रही है।

चित्रांकनः पार्थो सेन

लेखनः मनोहर चमोली 'मनु'

चाँद की परछाई

रामू तालाब के किनारे पानी में नज़रें गड़ाए बैठा था। तभी वहाँ उसका दोस्त श्यामू पहुँच गया। उसने रामू से पूछा, "तुम यहाँ बैठे क्या कर रहे हो? हम तुम्हारा इंतज़ार खेल के मैदान में कर रहे थे।"

"मैं यहाँ चाँद की परछाई देख रहा हूँ," रामू ने तालाब के पानी से नज़रें हटाए बिना जवाब दिया।

"क्यूँ, क्या हो गया चाँद की परछाई को?" श्यामू ने उसके पास बैठते हुए कहा।

कल रात मैंने देखा था तो चाँद की परछाई ठीक इसी जगह पर थी, मगर आज सुबह 5 बजे परछाई दूसरी जगह पर थी। परछाई तो एक जगह ठहरती ही नहीं ... अभी यहाँ तो अभी वहाँ ...मैं एक घंटे से तालाब में चाँद की परछाई को देखे जा रहा हूँ ... अब तो मेरी आँखें भी दर्द करने लगी हैं ... चाँद भी चलता है क्या?" रामू ने हैरानी से पूछा।

"हाँ चाँद भी चलता है, जैसे हमारी पृथ्वी घूमती है ... किताब में पढ़ा नहीं है क्या?" श्यामू अपने मित्र की बात पर मन ही मन हँस पड़ा।

"पढ़ा तो है मगर ..." रामू अब भी समझ नहीं पा रहा था।

पढ़ा है तो अगर-मगर क्यूँ? ... पृथ्वी घूमती है, इसका क्या मतलब हुआ?" श्यामू अब झुँझलाने लगा था।

"क्या मतलब हुआ?"

"इसका मतलब यह हुआ कि पृथ्वी 24 घंटे में अपनी अक्षिय गति पूरी करती है। मतलब अपनी धुरी पर घूमती है। इसी प्रकार चाँद लगभग 27.5 दिन में अपनी अक्षिय गति पूरी करता है। चाँद की अक्षिय गति पृथ्वी की गति से बहुत ही कम है।'' श्यामू ने विस्तार से समझाने की कोशिश की। ''अच्छा, पृथ्वी गति में है तो पृथ्वी पर मौजूद तालाब भी गति में होगा यानी चाँद की परछाई कभी तालाब के इस भाग में तो कभी उस भाग में?"

''हाँ, बिल्कुल सही। पता है, चाँद की अक्षिय गति का समय और चाँद के पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाने का समय बराबर होता है। इसीलिए हम चाँद का आधा हिस्सा ही देख पाते हैं, जो कि घटता-बढ़ता रहता है।''

"अरे, इतनी-सी बात मेरी समझ में क्यूँ, नहीं आई?" रामू को अपने-ऊपर ग़ुस्सा आ रहा था।

"इसलिए समझ में नहीं आई क्योंकि तुम पढ़ते हो तो सोचते नहीं और सोचते हो तो पढ़ते नहीं ... पढ़ना भी ज़रूरी है और पढ़े हुए विषय के बारे में सोचना भी!"

"अब मैं पढ़ूँगा तो सोचूँगा और सोचूँगा तो पढ़ूँगा," रामू की आवाज़ सुनते ही श्यामू खिलखिला पड़ा।

चित्रांकन: पार्थो सेन   लेखन: शाहिद अनवर

राज्य परियोजना कार्यालय, सर्व शिक्षा अभियान एवम् राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान
डी.पी.ई.पी. भवन, शिक्षा निदेशालय, लालपानी, शिमला - 171 001 (हि.प्र.)
ई-मेल: **spdssahp@gmail.com**

Ptd. by: **new era graphics**, Ph.: 0177 2628276